रविवार 12 जुलाई, 2020

विषय — धर्मविधि

स्वर्ण पाठ: होशे 6 : 6

"क्योंकि मैं बलिदान से नहीं, स्थिर प्रेम ही से प्रसन्न होता हूं, और होमबलियों से अधिक यह चाहता हूं कि लोग परमेश्वर का ज्ञान रखें॥"

उत्तरदायी अध्ययन: भजन संहिता 51 : 10-13, 15-17

10 हे परमेश्वर, मेरे अन्दर शुद्ध मन उत्पन्न कर, और मेरे भीतर स्थिर आत्मा नये सिरे से उत्पन्न कर।
11 मुझे अपने साम्हने से निकाल न दे, और अपने पवित्र आत्मा को मुझ से अलग न कर।
12 अपने किए हुए उद्धार का हर्ष मुझे फिर से दे, और उदार आत्मा देकर मुझे सम्भाल॥
13 तब मैं अपराधियों को तेरा मार्ग सिखाऊंगा, और पापी तेरी ओर फिरेंगे।
15 हे प्रभु, मेरा मुंह खोल दे तब मैं तेरा गुणानुवाद कर सकूंगा।
16 क्योंकि तू मेलबलि से प्रसन्न नहीं होता, नहीं तो मैं देता; होमबलि से भी तू प्रसन्न नहीं होता।
17 टूटा मन परमेश्वर के योग्य बलिदान है; हे परमेश्वर, तू टूटे और पिसे हुए मन को तुच्छ नहीं जानता॥

पाठ उपदेश

बाइबल

1. मीका 6 : 6-8

6 मैं क्या ले कर यहोवा के सम्मुख आऊं, और ऊपर रहने वाले परमेश्वर के साम्हने झुकूं? क्या मैं होमबलि के लिये एक एक वर्ष के बछड़े ले कर उसके सम्मुख आऊं?

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

7 क्या यहोवा हजारों मेढ़ों से, वा तेल की लाखों नदियों से प्रसन्न होगा? क्या मैं अपने अपराध के प्रायश्चित्त
में अपने पहिलौठे को वा अपने पाप के बदले में अपने जन्माए हुए किसी को दूं?
8 हे मनुष्य, वह तुझे बता चुका है कि अच्छा क्या है; और यहोवा तुझ से इसे छोड़ और क्या चाहता है, कि
तू न्याय से काम करे, और कृपा से प्रीति रखे, और अपने परमेश्वर के साथ नम्रता से चले?

2. 2 राजा 22 : 1(*से 1st* .), 2 (*से 2nd*,)

1 जब योशिय्याह राज्य करने लगा, तब वह आठ वर्ष का था, और यरूशलेम में एकतीस वर्ष तक राज्य
करता रहा।
2 उसने वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है और जिस मार्ग पर उसका मूलपुरुष दाऊद चला ठीक
उसी पर वह भी चला।

3. 2 राजा 23 : 21 (तथा) *केवल*, 21 (आज्ञा)-23, 25

21 और ... सारी प्रजा के लोगों को आज्ञा दी, कि इस वाचा की पुस्तक में जो कुछ लिखा है, उसके अनुसार
अपने परमेश्वर यहोवा के लिये फसह का पर्व मानो।
22 निश्चय ऐसा फसह न तो न्यायियों के दिनों में माना गया था जो इस्राएल का न्याय करते थे, और न
इस्राएल वा यहूदा के राजाओं के दिनों में माना गया था।
23 राजा योशिय्याह के अठारहवें वर्ष में यहोवा के लिये यरूशलेम में यह फसह माना गया।
25 और उसके तुल्य न तो उस से पहिले कोई ऐसा राजा हुआ और न उसके बाद ऐसा कोई राजा उठा, जो
मूसा की पूरी व्यवस्था के अनुसार अपने पूर्ण मन और मूर्ण प्राण और पूर्ण शक्ति से यहोवा की ओर फिरा
हो।

4. रोमियो 12 : 1, 2

1 इसलिये हे भाइयों, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर बिनती करता हूं, कि अपने शरीरों को
जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ: यही तुम्हारी आत्मिक सेवा
है।
2 और इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नये हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता
जाए, जिस से तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो॥

5. मत्ती 3 : 13-17

13 उस समय यीशु गलील से यरदन के किनारे पर यूहन्ना के पास उस से बपतिस्मा लेने आया।
14 परन्तु यूहन्ना यह कहकर उसे रोकने लगा, कि मुझे तेरे हाथ से बपतिस्मा लेने की आवश्यक्ता है, और तू मेरे पास आया है?
15 यीशु ने उस को यह उत्तर दिया, कि अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धामिर्कता को पूरा करना उचित है, तब उस ने उस की बात मान ली।
16 और यीशु बपतिस्मा लेकर तुरन्त पानी में से ऊपर आया, और देखो, उसके लिये आकाश खुल गया; और उस ने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर की नाईं उतरते और अपने ऊपर आते देखा।
17 और देखो, यह आकाशवाणी हुई, कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं॥

6. मत्ती 26 : 17-20, 26-30

17 अखमीरी रोटी के पर्व्व के पहिले दिन, चेले यीशु के पास आकर पूछने लगे; तू कहां चाहता है कि हम तेरे लिये फसह खाने की तैयारी करें?
18 उस ने कहा, नगर में फुलाने के पास जाकर उस से कहो, कि गुरू कहता है, कि मेरा समय निकट है, मैं अपने चेलों के साथ तेरे यहां पर्व्व मनाऊंगा।
19 सो चेलों ने यीशु की आज्ञा मानी, और फसह तैयार किया।
20 जब सांझ हुई, तो वह बारहों के साथ भोजन करने के लिये बैठा।
26 उस ने उस से कहा, तू कह चुका: जब वे खा रहे थे, तो यीशु ने रोटी ली, और आशीष मांग कर तोड़ी, और चेलों को देकर कहा, लो, खाओ; यह मेरी देह है।
27 फिर उस ने कटोरा लेकर, धन्यवाद किया, और उन्हें देकर कहा, तुम सब इस में से पीओ।
28 क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लोहू है, जो बहुतों के लिये पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है।
29 मैं तुम से कहता हूं, कि दाख का यह रस उस दिन तक कभी न पीऊंगा, जब तक तुम्हारे साथ अपने पिता के राज्य में नया न पीऊं॥
30 फिर वे भजन गाकर जैतून पहाड़ पर गए॥

7. यूहन्ना 19: 1, 16 (*से 1st.*)

1 इस पर पीलातुस ने यीशु को लेकर कोड़े लगवाए।
16 तब उस ने उसे उन के हाथ सौंप दिया ताकि वह क्रूस पर चढ़ाया जाए॥

8. यूहन्ना 20 : 1, 11-18

1 सप्ताह के पहिले दिन मरियम मगदलीनी भोर को अंधेरा रहते ही कब्र पर आई, और पत्थर को कब्र से
हटा हुआ देखा।
11 परन्तु मरियम रोती हुई कब्र के पास ही बाहर खड़ी रही और रोते रोते कब्र की ओर झुककर,
12 दो स्वर्गदूतों को उज्ज़वल कपड़े पहिने हुए एक को सिरहाने और दूसरे को पैताने बैठे देखा, जहां यीशु की
लोथ पड़ी थी।
13 उन्होंने उस से कहा, हे नारी, तू क्यों रोती है? उस ने उन से कहा, वे मेरे प्रभु को उठा ले गए और मैं नहीं
जानती कि उसे कहां रखा है।
14 यह कहकर वह पीछे फिरी और यीशु को खड़े देखा और न पहचाना कि यह यीशु है।
15 यीशु ने उस से कहा, हे नारी तू क्यों रोती है? किस को ढूंढ़ती है? उस ने माली समझकर उस से कहा, हे
महाराज, यदि तू ने उसे उठा लिया है तो मुझ से कह कि उसे कहां रखा है और मैं उसे ले जाऊंगी।
16 यीशु ने उस से कहा, मरियम! उस ने पीछे फिरकर उस से इब्रानी में कहा, रब्बूनी अर्थात हे गुरू।
17 यीशु ने उस से कहा, मुझे मत छू क्योंकि मैं अब तक पिता के पास ऊपर नहीं गया, परन्तु मेरे भाइयों के
पास जाकर उन से कह दे, कि मैं अपने पिता, और तुम्हारे पिता, और अपने परमेश्वर और तुम्हारे परमेश्वर
के पास ऊपर जाता हूं।
18 मरियम मगदलीनी ने जाकर चेलों को बताया, कि मैं ने प्रभु को देखा और उस ने मुझ से ये बातें कहीं॥

9. इब्रानियों 13: 20 (भगवान), 21 (*से 1st.*)

20 … शान्तिदाता परमेश्वर जो हमारे प्रभु यीशु को जो भेड़ों का महान रखवाला है सनातन वाचा के लोहू के
गुण से मरे हुओं में से जिला कर ले आया।
21 तुम्हें हर एक भली बात में सिद्ध करे, जिस से तुम उस की इच्छा पूरी करो, और जो कुछ उस को भाता है,
उसे यीशु मसीह के द्वारा हम में उत्पन्न करे, जिस की बड़ाई युगानुयुग होती रहे।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 241 : 19-22

सभी भक्ति का तत्व ईश्वरीय प्रेम का प्रतिबिंब और प्रदर्शन है, बीमारी को ठीक करना और पाप को नष्ट करना है। हमारे मास्टर ने कहा, "यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।"

2. 25 : 3-12

रक्त का आध्यात्मिक सार यज्ञ है। यीशु की आध्यात्मिक भेंट की प्रभावकारिता मानव रक्त की हमारी समझ से बहुत अधिक है। यीशु का भौतिक रक्त पाप से शुद्ध करने के लिए प्रभावकारी था, जब इसे "शापित वृक्ष" पर बहाया गया, लेकिन इससे अधिक नहीं जब वह अपने पिता के काम के बारे में रोज़ाना जाता था तो उसकी नसों में बहता था। उसका असली मांस और खून उसका जीवन था; और वे वास्तव में उसका मांस खाते हैं और उसका खून पीते हैं, जो उस दिव्य जीवन का हिस्सा है।

3. 32 : 28-26

फसह, जो यीशु ने अपने क्रूस पर चढ़ने से पहले रात को निसान के महीने में अपने शिष्यों के साथ खाया था, एक दुखद अवसर था, दिन के अंत में लिया गया एक उदास भोजन, छाया के साथ एक शानदार कैरियर के धुंधलेपन में तेजी से गिर रहा था; और इस भोजन ने हमेशा के लिए यीशु के कर्मकांड या रियायतों को समाप्त कर दिया।

उनके अनुयायियों, दुखी और चुपचाप, अपने मास्टर के दर्द के समय का अनुमान लगाते हुए, स्वर्गीय मन्ना में शामिल हो गए, जिसने अतीत में सत्य के सताए हुए अनुयायियों को जंगल में खिलाया था। उनकी रोटी वास्तव में स्वर्ग से नीचे आई थी। यह आध्यात्मिक का महान सत्य था, बीमारों को ठीक करना और त्रुटि को दूर करना। उनके मास्टर ने पहले यह सब समझाया था, और अब यह रोटी उन्हें खिला रही थी और उन्हें बनाए रख रही थी। उन्होंने इस रोटी को घर-घर में पैदा किया था, दूसरों को इसे समझाते हुए (समझाते हुए), और अब इसने खुद को तसल्ली दी।

आध्यात्मिक होने के इस सत्य के लिए, उनके स्वामी हिंसा को पीड़ित करने वाले थे और उनके दुःख के प्याले को सूखा। उसे उन्हें छोड़ना होगा। उस पर विजय प्राप्त करने की महान महिमा के साथ, उन्होंने धन्यवाद दिया और कहा, "तुम सब इससे पी लो।"

जब उसमें मानवीय तत्व परमात्मा से संघर्ष करता है, तो हमारे महान शिक्षक ने कहा: “मेरी नहीं लेकिन तेरी ही इच्छा पूरी हो।” — अर्थात्, मांस को नहीं, परन्तु आत्मा को मुझमें दर्शाया जाए यह आध्यात्मिक प्रेम की नई समझ है। यह मसीह, या सत्य के लिए सभी देता है। यह अपने दुश्मनों को आशीर्वाद देता है, बीमारों को चंगा करता है, त्रुटि को मिटाता है, अतिचारों और पापों से मृतकों को उठाता है, और हृदय में नम्र गरीबों को सुसमाचार सुनाता है.

4. 34 : 29-2

गैलिलियन सागर के तट पर हर्षित बैठक में हमारे प्रभु के अंतिम भक्त और उनके अंतिम आध्यात्मिक नाश्ते के बीच उनके शिष्यों के साथ उज्ज्वल सुबह के घंटों में क्या विपरीत है! उसकी उदासी महिमा में पारित हो गई थी, और उसके शिष्यों के पश्चाताप में दु: ख, - दिलों का पीछा किया और गर्व ने डांटा।

5. 35 : 10-19, 25-29

एक नए प्रकाश की सुबह में हमारे भगवान के साथ यह आध्यात्मिक बैठक सुबह का भोजन है जिसे ईसाई वैज्ञानिक स्मरण करते हैं। वे मसीह, सत्य के सामने झुकते हैं, अपने पुन: प्रकट होने और चुपचाप दिव्य सिद्धांत, प्रेम के साथ कम्यून प्राप्त करने के लिए। वे मृत्यु पर अपने भगवान की जीत का जश्न मनाते हैं, मृत्यु के बाद मांस में उसका परिवीक्षा, मानव परिवीक्षा का अनुकरण, और पदार्थ से ऊपर उसका आध्यात्मिक और अंतिम तप, या जब वह भौतिक दृष्टि से बाहर उठता है.

हमारा बपतिस्मा सभी त्रुटि से शुद्धिकरण है। ... हमारा ईश्वरवादी एक ईश्वर के साथ आध्यात्मिक संवाद है। हमारी रोटी, "जो स्वर्ग से नीचे आती है," सत्य है। हमारा प्याला पार है। हमारी शराब प्रेम की प्रेरणा थी, हमारे मास्टर ने मसौदा तैयार किया और अपने अनुयायियों की प्रशंसा की।

6. 43 : 11-4

का अंतिम प्रमाण सबसे अधिक, सबसे अधिक समझाने वाला, अपने छात्रों के लिए सबसे अधिक लाभदायक था। क्रूर अत्याचारियों, देशद्रोहियों और उनके विश्वासघाती की आत्महत्या की दुर्भावना, मनुष्य के महिमामंडन और ईश्वर के सच्चे विचार के लिए ईश्वरीय प्रेम से प्रभावित हुई, जिसे यीशु के उत्पीड़कों ने मार डाला और हत्या करने की कोशिश की। सत्य का अंतिम प्रदर्शन जो यीशु ने सिखाया था और जिसके लिए उसे सूली पर चढ़ाया गया था, उसने दुनिया के लिए एक नया युग खोला। जो लोग उसके प्रभाव को बनाए रखने के लिए उसे मारते थे और उसे बढ़ाते थे।

यीशु कड़वाहट के प्याले के कारण प्रदर्शन में ऊँचा उठ गया। मानव कानून ने उसकी निंदा की थी, लेकिन वह दिव्य विज्ञान का प्रदर्शन कर रहा था। अपने दुश्मनों की बर्बरता की पहुंच से बाहर, वह मामले और मृत्यु दर की रक्षा में आध्यात्मिक कानून के तहत काम कर रहा था, और उस आध्यात्मिक कानून ने उसे बनाए रखा। परमात्मा को हर बिंदु पर मानव को दूर करना होगा। विज्ञान यीशु ने सिखाया और जीना चाहिए, जीवन, पदार्थ और बुद्धि के बारे में सभी भौतिक विश्वासों पर विजय प्राप्त करना चाहिए, और इस तरह की मान्यताओं से बढ़ती हुई बहुपक्षीय त्रुटियां।

प्यार नफरत पर विजय चाहिए। सत्य और जीवन को जीत और त्रुटि और मृत्यु पर रोकना होगा, इससे पहले कि काँटे को एक मुकुट के लिए अलग रखा जा सके, बीडक्शन कहता है, "अच्छा काम अच्छा एवं विश्वसनीय सेवक," और आत्मा की सर्वोच्चता का प्रदर्शन किया जाए।

7. 33 : 31-17

क्या वे सभी जो यीशु की याद में रोटी खाते हैं और शराब पीते हैं, अपना प्याला पीना चाहते हैं, अपना क्रूस लेते हैं, और मसीह-सिद्धांत के लिए सब छोड़ देते हैं? फिर एक मृत संस्कार की प्रेरणा को दिखाने के बजाय, त्रुटि दिखाने और शरीर को "भगवान के लिए स्वीकार्य," बनाकर दिखाने के बजाय कि सत्य समझ में आ गया है? यदि मसीह, सत्य, प्रदर्शन में हमारे पास आए हैं, तो प्रदर्शन के लिए किसी अन्य स्मारक की आवश्यकता नहीं है, प्रदर्शन के लिए इमैनुअल, या भगवान हमारे साथ हैं; और यदि कोई मित्र हमारे साथ है, तो हमें उस मित्र के स्मारक की आवश्यकता क्यों है?

अगर कभी संस्कार का हिस्सा बनने वाले सभी लोगों ने यीशु की पीड़ाओं को याद किया और उनके प्याले को पीया, तो उन्होंने दुनिया में क्रांति ला दी। यदि सभी जो भौतिक प्रतीकों के माध्यम से अपने स्मरणोत्सव की तलाश करते हैं, तो क्रूस को उठाएंगे, बीमारों को चंगा करेंगे, बुराइयों को बाहर निकालेंगे, और गरीबों को मसीह, या सत्य का उपदेश देंगे, - ग्रहणशील विचार, - वे सहस्त्राब्दी में लाएंगे।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6